उग्रवाद, राज्य एवं पितृसत्तात्मकता का कसता शिकंजा: कश्मीर घाटी की महिलाओं की स्थिति, प्रतिरोध एवं स्वर का विश्लेषण

सामाजिक विमर्श
3(1) 1–14, 2020
© 2020 SAGE and CSD
Reprints and permissions:
in.sagepub.com/journals-permissions-india
DOI: 10.1177/2581654320946407
http://smv.sagepub.in

उर्बा मलिक[1]

सार

इस लेख में तीन दशकों से उग्रवाद प्रभावित कश्मीर घाटी में महिलाओं की गिरती सामाजिक स्थिति तथा उनकी शारीरिक एवं मानसिक यातनाओं के वर्णन करते हुए उन पर उग्रवाद, पितृसत्तात्मकता एवं राज्य के कसते शिकंजे की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है। जहाँ उग्रवादियों के द्वारा महिलाओं के साथ जबरन विवाह एवं उनके शारीरिक शोषण की घटनायें घटती रही हैं, वहीं राज्य की सुरक्षा एजेंसियां महिलाओं के साथ सामूहिक बलात्कार जैसी घटनाओं को अंजाम देती रही हैं। ऐसी अवस्था मे राज्य द्वारा पोषित पितृसत्तात्मकता की मन:स्थिति एवं पवित्रता और सम्मान जैसी अवधा-रणाओं का दुरूपयोग स्पष्ट दिखाई देता है। पितृसत्तात्मकता राज्य की सहयोगी संस्था बन जाती है। उग्रवाद धर्म का प्रयोग करता है, और इस प्रक्रिया में घाटी में इस्लाम प्रभावी हो जाता है। समाज में रूढ़िवादिता एवं प्रतिगामिता भी बढ़ जाती है। इसका प्रभाव महिलाओं पर सबसे अधिक देखने को मिलता है। महिलाओं की सामाजिक स्थिति में गिरावट आती है, एवं उनकी सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति बाधित हो जाती है। इन सभी कठिनाइयों के बावजूद, महिलायें अपनी आवाज को व्यक्तिगत एवं संगठित रूप में उठाती रही हैं। यह इस बात की ओर इंगित करता है कि कश्मीर घाटी की महिलायें, चेतना शून्य, असहाय व पीड़ित नहीं हैं। उनमें प्रतिरोध एवं स्वर की एजेंसी विद्यमान है। अंत में, इस बात पर बल दिया गया है कि संघर्ष के दौरान महिलाओं को सबसे अधिक शारीरिक एवं मानसिक रूप से कष्ट सहना पड़ता है। अत: कश्मीर में शांति प्रक्रिया स्थापित करने के लिये महिलायें एक मजबूत एवं महत्वपूर्ण स्तंभ सिद्ध हो सकती हैं।

मुख्य शब्द

महिलायें, उग्रवाद, राज्य, पितृसत्तात्मकता, प्रतिरोध, एजेंसी, शांति प्रक्रिया।

प्राक्कथन

प्राय: पितृसत्तात्मकता प्रधान समाज में महिलाओं को पुरुषों की तुलना में अनेक अधिकारों से वंचित रहना पड़ता है, लेकिन, युद्ध, संघर्ष एवं उग्रवाद के दिनों में महिलाओं की सामाजिक स्थिति अधिक

* यह आलेख अंग्रेजी भाषा से हिन्दी में अनुवाद किया गया है।

[1] उर्बा मलिक जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में शोध छात्रा हैं।
ई-मेल: urba.2010@gmail.com